विश्व न्याय मन्दिर

रिज़वान 2014

विश्व के बहाईयों के प्रति

परमप्रिय मित्रों,

बहाउल्लाह के अनुयायियों को एक ऐक्यकारी आध्यात्मिक प्रयास में एकजुट करने वाले अभियान अर्थात् दिव्य योजना के प्रकटीकरण के वर्तमान चरण को आरम्भ हुए पूरे तीन साल बीत चुके हैं। ईश्वर के मित्रगण, इसकी निर्धारित परिसमाप्ति से, अब केवल दो वर्षों की दूरी पर खड़े हैं। विकास की प्रक्रिया को अनवरत रूप से आगे बढ़ाने वाली दो अत्यावश्यक अभिगमन -- प्रशिक्षण संस्थान के पाठ्यक्रमों के माध्यम से प्रतिभागियों का सतत् प्रवाह और विकास की निरन्तरता के साथ क्लस्टरों के अभिगमन -- इन दोनों को ही पिछले वर्ष आयोजित युवा सम्मेलनों से तीव्रगति से प्रवाहित ऊर्जा से अत्यंत बल प्राप्त हुआ है। बहाई विश्व ने, बड़ी संख्या में युवाओं को सेवा के क्षेत्र में गतिशील करने की दिशा में जो विस्तारित क्षमता हासिल की है अब उसके और अधिक परिणाम प्रकट होंगे। बचे हुए समय में, विकास के मौजूदा कार्यक्रमों को सशक्त करने और नए विकास-कार्यक्रमों को आरम्भ करने जैसे अत्यंत महत्वपूर्ण दायित्वों को तत्काल पूरा करने का संकेत मिल रहा है। इस अवधि के समाप्त होने से पूर्व ही, ऐसे क्लस्टरों में जहाँ इस तरह के कार्यक्रम पहले ही आरम्भ हो चुके हैं, लक्ष्य की पूर्णाहुति हेतु शेष दो हजार की संख्या को शामिल करने के लिए 'महानतम नाम' का समुदाय आज एक अच्छे मुकाम पर खड़ा है।

हमें यह देखकर कितनी खुशी होती है कि उन क्लस्टरों की संख्या करीब तीन हजार तक अभी ही पहुँच चुकी है, जहाँ इस प्रयास को दुनिया के दूर-दराज़ के क्षेत्रों में, तथा विविधतापूर्ण परिस्थितियों और संस्थापनों के, क्लस्टरों में, पूरी ताकत से आगे बढ़ाया जा रहा है। बहुत से क्लस्टर उस मुकाम पर पहुँच चुके हैं जहाँ कुछ सरल कार्य-योजनाओं को क्रियान्वित करने के माध्यम से अभिगमन उत्पन्न किया जा रहा है। अन्य क्लस्टरों में, गतिविधियों के क्रमिक चक्रों के पश्चात, योजना की संरचना के अन्तर्गत प्रयास आरम्भ करने वाले व्यक्तियों की संख्या बढ़ गई है और गतिविधियों की अवस्था को गहन बना दिया गया है, आध्यात्मिक शिक्षा की प्रक्रिया की गुणवत्ता अनुभव के कारण बेहतर हो गई है, जिससे आत्माएँ उसमें भाग लेने के लिए अधिक आतुरता से आकर्षित होने लगी हैं। कभी-कभार गतिविधियों में एक चुप्पी-सी प्रतीत होती है या आगे बढ़ने की राह में कोई बाधा खड़ी हो सकती है, लेकिन इस अवरोध के कारणों को जानने के लिए खोजपरक परामर्श और उसके साथ ही धैर्य, साहस एवं सतत् परिश्रम के कारण पुनः गतिशीलता प्राप्त कर ली जाती है। योजना के तीन

नायकों -- व्यक्ति, समुदाय और प्रभुधर्म की संस्थाओं -- की बढ़ती हुई क्षमता के अनुरूप, अधिक से अधिक क्लस्टरों में, पारस्परिक रूप से सहयोगात्मक वातावरण के निर्माण के लिए, विकास-कार्यक्रम का दायरा और उसकी जटिलता बढ़ती जा रही है। और हमें हर्ष है कि, जैसीकि हमें उम्मीद थी, ऐसे क्लस्टरों की संख्या बढ़ रही है जहाँ अब सौ या इससे भी अधिक व्यक्ति एक आध्यात्मिक, गत्यात्मक और रूपांतरकारी जीवन-पद्धति का प्रतिमान तैयार करने के कार्य में, हजार या इससे भी अधिक लोगों की भागीदारी को सहज बनाने के कार्य में जुटे हुए हैं। निश्चिय ही, इस प्रक्रिया के मूल में, अत्यंत आरम्भ से ही, भौतिक एवं आध्यात्मिक समृद्धि के उस विचार-दर्शन की दिशा में सामूहिक अभिगमन रहा है जिसकी संकल्पना 'विश्व के जीवनदाता' (बहाउल्लाह) द्वारा दी गई थी। लेकिन जब इतनी बड़ी संख्या में लोग शामिल हो रहे हैं तो पूरी जनसंख्या का अभिगमन दिखाई दे रहा है।

इस अभिगमन का प्रमाण ख़ासतौर पर उन क्लस्टरों में मिलता है जहाँ स्थानीय मशरिकुल-अज़कार की स्थापना की जानी है। उदाहरण के तौर पर, ऐसा ही एक क्लस्टर है वैनुअतु। ताना द्वीप पर रहने वाले मित्रों ने योजना के अनुसार स्थापित होने जा रहे उपासना मन्दिर के बारे में लोगों को जागरूक बनाने का महान प्रयास किया है और वे उस द्वीप के 30,000 निवासियों में से कम से कम एक-तिहाई लोगों को, उसके महत्व के बारे में विविध प्रकार से सतत् विस्तारित होते संवाद में शामिल कर चुके हैं। बहाउल्लाह की शिक्षा को लोगों के साथ साझा करने तथा एक जीवन्त प्रशिक्षण संस्थान की पहुँच को विस्तारित करने के वर्षों के अनुभव से इतने सारे लोगों के साथ उन्नत स्तर का संवाद बनाए रखने की क्षमता और अधिक परिष्कृत हो गई है। इस द्वीप के ख़ासतौर पर किशोर समूह फल-फूल रहे हैं, जिन्हें गाँवों के उन मुखिया से प्रोत्साहन प्राप्त हो रहा है, जो यह देख रहे हैं कि किस तरह ये प्रतिभागी आध्यात्मिक रूप से सशक्त हैं। अपने बीच मौजूद एकता और समर्पण की भावना से प्रोत्साहित होकर ये युवा लोग न केवल अपनी निष्क्रियता और आलस्य-भावना से मुक्त होने में सफल हुए हैं बल्कि विभिन्न प्रकार के व्यावहारिक प्रायोजनों के माध्यम से उन्हें अपने समुदाय की बेहतरी के लिए भी कार्य करने का साधन उपलब्ध हुआ है, और इसके परिणामस्वरूप न केवल उनके अपने माता-पिता बल्कि सभी उम्र के लोगों को रचनात्मक क्रिया में प्रेरणा प्राप्त हुई है। बहाईयों एवं वृहत्तर समाज में, मार्गदर्शन एवं कठिन परिस्थितियों के निराकरण के लिए स्थानीय आध्यात्मिक सभा की ओर उन्मुख होने की कृपा को समझा जाने लगा है, और प्रत्युत्तर में आध्यात्मिक सभाओं के निर्णयों में विवेक और संवेदनशीलता के गुण सतत् बढ़ते हुए रूप में झलकने लगे हैं। यहाँ दिखाने के लिए बहुत कुछ है कि योजना की संरचना के तत्वों को गतिविधियों के लिए एक समग्र रूप में सम्मिलित किए

जाने पर, जनसमूहों पर गहरा प्रभाव डाला जा सकता है। और विस्तार एवं सुगठन के सतत् जारी कार्य की पृष्ठभूमि में ही -- गहन विकास कार्यक्रम का तीसवाँ चक्र अभी हाल ही में समाप्त हुआ है -- मित्रगण उस द्वीप के बाकी निवासियों के साथ यह सक्रिय तलाश भी जारी रखे हुए हैं कि उनके बीच एक मशरिकुल-अज़्कार अर्थात् “मनुष्यों की आत्माओं के लिए एक सामूहिक केन्द्र” की स्थापना किए जाने का क्या अर्थ है। उपासना मन्दिर ने किस हद तक उनकी कल्पनाओं को प्रेरित किया है इसकी झलक दिखाते हुए और उस मन्दिर की छाया तले जीवन जीने वाले लोगों पर वह कैसा प्रभाव डालने वाला है उसके अद्‌भुत परिदृश्यों के द्वार खोलते हुए, ताना द्वीप के वासियों ने वहाँ के पारम्परिक नेताओं के सक्रिय सहयोग के साथ उपासना मन्दिर के लिए सौ से भी अधिक डिजाइन की संकल्पनाएँ प्रस्तुत की हैं।

इस हृदयस्पर्शी विवरण के प्रतिरूप अनेक उन्नत क्लस्टरों से भी प्राप्त होते हैं, जहाँ बहाउल्लाह की शिक्षाओं के मूल अभिप्रायों को, पड़ोस के समुदायों और गाँवों की जीवन-दशाओं को प्रभावित करने के लिए उपयोग में लाया गया है। इनमें से प्रत्येक में, बहाउल्लाह के व्यक्तित्व से सतत् बढ़ते हुए रूप में परिचित होते हुए, वहाँ का जन-समुदाय अपने अनुभवों की समीक्षा, परामर्श और अध्ययन के माध्यम से यह सीख रहा है कि ‘उनके’ प्रकटीकरण में निहित यथार्थ के अनुसार वे कैसा आचरण कर सकते हैं, जिससे कि आध्यात्मिक बन्धुओं का विस्तृत होता दायरा, सामूहिक उपासना और सेवा के माध्यम से अब और अधिक घनिष्ठता से जुड़ जाये।

उन्नति के पथ पर बहुत आगे बढ़ चुके समुदाय अब अनेक तरीकों से दूसरों के द्वारा अनुसरण के लिए आमंत्रण का मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं। तथापि, किसी क्लस्टर में गतिविधियों का स्तर चाहे जो भी हो, एक समान ढाँचे के अन्तर्गत स्थानीय मित्रों में व्याप्त, सीखने की क्षमता ही वह कारण है जो विकास के पथ पर उनकी प्रगति की रफ़्तार को प्रेरित करती है। इस उद्यम में हर किसी की अपनी भूमिका है; प्रत्येक का योगदान सम्पूर्ण इकाई को समृद्ध करता है। सबसे अधिक गत्यात्मक क्लस्टर वे हैं जिनमें, उस समुदाय के संसाधन या संचालित किए जाने वाली गतिविधियों की संख्या चाहे जो भी हों, मित्रगण यह समझते हैं कि उनका दायित्व इस बात की पहचान करना है कि प्रगति के लिए किस बात की जरुरत है -- नवोदित क्षमता जिसे पोषित करना आवश्यक है, नई कुशलताएँ अर्जित करना आवश्यक है, किसी शुरुआती प्रयास को आरम्भ करने वाले लोगों का साथ निभाना आवश्यक है, समीक्षा के अवसर उत्पन्न करना आवश्यक है, सामूहिक प्रयास जिन्हें संयोजित करना आवश्यक है -- और उसके बाद उसे हासिल करने के लिए उन रचनात्मक तौर-तरीकों की पहचान करना जिनसे

आवश्यक समय और संसाधन उपलब्ध किए जा सकें। यह तथ्य कि प्रत्येक परिस्थिति उसकी स्वयं की चुनौतियाँ प्रस्तुत करती है, प्रत्येक समुदाय को न केवल शेष बहाई जगत में सीखे जा रहे अनुभवों से लाभ उठाने में, बल्कि उस ज्ञान भण्डार में वृद्धि करने में भी सक्षम बना रही है। इस वास्तविकता की जागरूकता व्यक्ति को क्रिया के लिए किसी सख़्त फॉर्मूले की निष्फल तलाश की चेष्टा से मुक्त करता है, लेकिन साथ ही विविध प्रकार के परिदृश्यों से प्राप्त अन्तर्दृष्टियों को समाहित भी कर पाता है ताकि वह अपने परिवेश में खास स्वरूप ग्रहण करने वाली विकास-प्रक्रिया को अधिक जानकार बना सके। यह सम्पूर्ण तरीका “सफलता” और “विफलता” की उन संकीर्ण अवधारणाओं से बिल्कुल भिन्न है जो उत्तेजना को जन्म देती हैं या फिर इच्छा-शक्ति शक्तिहीन बना देती हैं। अनासक्ति की आवश्यकता है। जब कोई प्रयास सिर्फ ईश्वर के निमित्त किया जाता है तो जो भी होता है वह ‘उन्हीं’ का होता है और ‘उनके’ नाम पर हासिल की गई हर विजय ‘उनके’ गुणगान का एक अवसर बन जाती है।

किए जाने वाले प्रयासों और उसके प्रत्युत्तर में प्रदान की जाने वाली स्वर्गिक सहायता के अन्तर्सम्बन्ध का विवरण हमारे धर्म के पवित्र लेखों में बहुत बार मिलता है। ‘मास्टर’ ने अपनी एक पाती में हमें आश्वस्त किया है कि “यदि तुम केवल प्रयास ही करो तो” “यह सुनिश्चित है कि ये आभाएँ अपनी चमक बिखेरेंगी, करुणा के ये बादल अपनी फुहारों की वर्षा करेंगे, इन जीवन-दायिनी बयारों के झोंके उभरेंगे व प्रवाहित होंगे, यह मोहक सुगन्ध भरी कस्तूरी दूर-दूर तक अपनी सुरभि बिखेरेगी।“ पवित्र समाधियों के बारम्बार दर्शन के दौरान हम आपकी ओर से सर्वशक्तिमान परमेश्वर से याचना करते हैं कि वे आपको सहायता और शक्ति प्रदान करें, कि जो लोग अभी भी दिव्य शिक्षाओं से अपरिचित हैं उन तक पहुँच प्राप्त करने और प्रभुधर्म में उन्हें पुष्ट करने के आपके प्रयासों को प्रचुर कृपा प्राप्त हो, और उस परमात्मा की असीम कृपाओं पर आपकी निर्भरता हमेशा अडिग रहे। हमारी प्रार्थनाओं में आप सदा हमारे साथ हैं और अपनी याचनाओं के दौरान हम आपके निष्ठावान पावन कार्यों का स्मरण करना कभी चूकेंगे नहीं। जब हम ‘आशीर्वादित सौन्दर्य’ के अनुयायियों के समक्ष अगले दो वर्षों में प्रस्तुत कर्तव्यों पर विचार करते हैं तो सक्रिय होने के लिए प्रिय ‘मास्टर’ द्वारा किया गया यह प्रभावी आह्वान हमारी चेतना को उत्प्रेरित करने वाला होता है: “सभी पर्दों को छिन्न-भिन्न कर दो, बाधाओं को परे हटा दो, जीवनदायी जल भेंट करो और मुक्ति का मार्ग दिखाओ।“

- विश्व न्याय मन्दिर